शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २३ : अंक ३६ : नई दिल्ली : १-७ दिसम्बर २०१७

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए सानंद बीस तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि सम्मेद शिखर में पधार गए हैं। त्रिदिवसीय प्रवास के उपरान्त आचार्यप्रवर यहां से चास-बोकारो की ओर प्रस्थित होंगे। वहां पूज्यप्रवर का ६-८ दिसम्बर का प्रवास पूर्व निर्धारित है। घोषित कार्यक्रमानुसार आचार्यप्रवर १३ जनवरी २०१८ को उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर में पधार जाएंगे। पूज्यप्रवर के पंच दिवसीय प्रवास में वहां वर्धमान महोत्सव समायोज्य है। आचार्यप्रवर १५४वें मर्यादा महोत्सव के लिए २० जनवरी को कटक में मंगल प्रवेश करेंगे। वहां २२-२४ जनवरी को मर्यादा महोत्सव का त्रिदिवसीय भव्य आयोजन होगा।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर झारखण्ड में

ऐसे बनोगे सुखी

२३ नवम्बर। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः आसनसोल से चलबलपुर की ओर प्रस्थान किया। आसनसोल का मार्गस्थ संकट मोचन हनुमान मंदिर आचार्यप्रवर की दृष्टि का विषय बना। आचार्यप्रवर आसनसोल के श्रद्धालु चोरड़िया परिवार की एक अक्षम महिला को दर्शन देने हेतु करीब एक किमी का चक्कर स्वीकार कर उसके घर में पधारे। तेरापंथ धर्मसंघ के दशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञजी संसारपक्ष में इस परिवार से संबंधित थे। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का यह संसारपक्षीय ननिहाल परिवार है। घर के बाहर साध्वीप्रमुखाजी ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। पूज्यप्रवर को अपने आंगन में पाकर वह वृद्ध श्रद्धालु महिला और अन्य परिजन धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। आचार्यप्रवर संकरी गलियों से होते हुए पुनः राजमार्ग पर पधारे।

मार्ग में संतोष जैन नामक दिगम्बर समाज के एक व्यक्ति ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। उन्होंने बताया कि मैं छत्तीसगढ़ के मनेन्द्रगढ़ जिला में सलूजा का निवासी हूं। यहां शतरंज की 'कोल इंडिया टूर्नामेंट' खेलने आया हूं। आचार्यप्रवर को छत्तीसगढ़ पधारने की प्रार्थना करते हुए उन्होंने कहा--'गुरुजी! सलूजा आइए। वहां मांसाहार बहुलतया होता है और वह आदिवासी क्षेत्र भी है। वहां के बहुत लोगों को आपके उपदेशों की आवश्यकता है। उन्हें समझाने के लिए आप वहां पधारिए।'

हरियाणा के एक बंसल परिवार ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मार्ग के परिपार्श्वस्थ अपने घर में पधारने की भावपूर्ण विनती की। बताया गया कि यदा-कदा चारित्रात्माओं का प्रवास उनके घर में होता रहता है। पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए मंगलपाठ सुनाया। मार्गवर्ती नियामतपुर के ग्रामीणों को भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आज का गंतव्य स्थल राजमार्ग से करीब दो किमी भीतर स्थित था। राजमार्ग के भीतर का यह क्षेत्र मुस्लिम बहुल आबादी वाला है। अनेकानेक लोग पूज्यप्रवर को आदाब कर अपनी परंपरानुसार अहिंसा यात्रा प्रणेता का अभिवादन कर रहे थे। आचार्यप्रवर उन्हें अपने करकमलों से अपनी परंपरानुसार मंगल आशीष प्रदान कर रहे थे।

करीब १६ किमी का प्रलंब विहार परिसंपन्न कर परम पूज्य आचार्यप्रवर चलबलपुर में पधारे। गीतांजलि मेरिज हॉल में आज का प्रवास हुआ। यह पड़ाव स्थल पूज्यप्रवर की पश्चिम बंगाल की इस यात्रा के अंतिम पड़ाव स्थल के रूप में माना जा रहा है।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'इस संसार में दुःख भी है और सुख भी है। मानसिक शांति, चित्त की प्रसन्नता एक बड़ा सुख होता है। चित्त में शान्ति है तो आदमी थोड़ी प्रतिकूलता को भी आराम से झेल सकता है। चित्त की अशांति की स्थिति में थोड़ी-सी प्रतिकूलता को भी झेलना मुश्किल हो सकता है।

चैतसिक स्तर पर आदमी सुखी रहे, इसके लिए शास्त्रकार ने कुछ बातें बताई हैं--अपने आपको तपाना सुकुमारता का त्याग--आदमी में कुछ कठोर जीवन जीने का आयास रहे तो वह सुखी रह सकता है। जिसे कठोरता को झेलने का अभ्यास हो, वह थोड़ी कठिनाई में भी अविचलित रह सकता है। आदमी को आरामतलब नहीं बनना चाहिए। यदि आदमी श्रमशील हो तो जीवन में शांति रह सकती है।

कामनाओं का अतिक्रमण--आदमी को इच्छाओं का संयम करना चाहिए। इच्छाएं आकाश के समान अनंत होती हैं। कामनाओं का अतिक्रमण कर आदमी दुःखों को अतिक्रांत कर सकता है।

द्वेष का छेदन--द्वेष भाव का छेदन करने वाला व्यक्ति दुःखों का अतिक्रमण कर सुखी बन सकता है। द्वेष भाव से आदमी दुःखी बन सकता है। किसी की उन्नति देखकर जलना नहीं चाहिए। दूसरों के सुख में खुश रहने वाला आदमी सुखी रह सकता है। दूसरों को दुःख में खुशी मनाने वाला आदमी कभी दुःखी बन सकता है।

रागभाव का विनयन--आदमी को भौतिक पदार्थों के प्रति आसक्ति-मोह का अल्पीकरण करना चाहिए। आसक्ति दुःख को पैदा करती है। आदमी को पदार्थों में ज्यादा मोह-आसक्ति नहीं करनी चाहिए।

इस प्रकार आदमी अपने आपको तपाकर, सुकुमारता का त्याग कर, कामनाओं का अतिक्रमण कर, द्वेष का छेदन कर और राग भाव का विनयन कर दुःखों का पार पाते हुए सुखी बन सकता है।'

कार्यक्रम में अहिंसा यात्रा की व्यवस्थाओं के दायित्व हस्तातंरण का उपक्रम रहा। इस संदर्भ में कोलकाता प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री कमल दुगड़ ने अपने कृतज्ञ भावों को अभिव्यक्ति दी। नेपाल-बिहार तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री अभयराज पटावरी ने दायित्व ग्रहण करने से पूर्व अपने विचार व्यक्त किए। तदुपरान्त आचार्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण कर कोलकाता प्रवास व्यवस्था समिति के कार्यकर्ताओं ने यात्रा व्यवस्थाओं के दायित्व के प्रतीक के रूप में जैन ध्वज नेपाल बिहार तेरापंथी सभा के कार्यकर्ताओं को सौंपा। कार्यक्रम का संयोजन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

दयावान बनो

२४ नवम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः पश्चिम बंगाल के चलबलपुर से झारखण्ड के मैथन की ओर प्रस्थान किया। ठंडी हवा से युक्त सर्दी से बचाने के लिए लोग यहां अलाव जलाए बैठे थे, वहीं ये महापुरुष जन-जन का आतप हरने के लिए गतिमान थे। पूज्यप्रवर ने मार्ग में पश्चिम बंगाल के पश्चिम वर्धमान जिले की सीमा को अतिक्रांत कर झारखंड धनबाद जिले में मंगल प्रवेश किया। दोनों राज्यों की विभाजन रेखा बनी हुई बराकर नदी के निकट धनबाद जिले के 'डिस्ट्रिक वेलफेयर ऑफिसर ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। चास-बोकारो सहित झारखण्ड के कई क्षेत्रों के निवासी अपने राज्य में अपने आराध्य के दर्शन कर अतिशय आह्लादित हुए।

खनिज संपदा के भंडार के रूप में विख्यात झारखण्ड राज्य में प्रवेश के साथ ही मार्ग के दोनों ओर कोयलों की खदानें दृष्टिगोचर होने लगीं, जहां से आज भी कोयलों को निकालने और उन्हें अन्यत्र भेजने का कार्य जारी था।

झारखंड प्रवेश के उपरान्त धनबाद सांसद श्री पशुपतिनाथ, मैथन नगर परिषद के अध्यक्ष डब्लू बावरी, धनबाद मेयर श्री शेखर अग्रवाल, इंटक के राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा धनबाद के पूर्व सांसद श्री चन्द्रशेखर दुबे ने मार्ग में पूज्यप्रवर का स्वागत-अभिनंदन किया। मैथन के अनेकानेक लोग पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। कुल करीब १२.० किमी का विहार संपन्न कर पूज्यप्रवर मैथन स्थित डी.वी.सी. उच्च विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

झारखण्ड के पर्यटन व खेलकूद विभाग मंत्री श्री अमर बावरी, निरसा विधायक श्री अरूप चटर्जी, धनबाद के पूर्व सांसद श्री चन्द्रशेखर दुबे ने पूज्यप्रवर के प्रवास कक्ष में उपस्थित होकर झारखण्ड पदार्पण के सदंर्भ में पूज्यप्रवर का आस्थासिक्त स्वागत किया।

झलक झारखण्ड की

झारखण्ड शब्द 'झाड़' और 'खण्ड' इन दो शब्दों से बना है। 'झाड़' शब्द स्थानीय भाषा में वन का पर्याय है और खण्ड टुकड़े का पर्यायवाची है। अपने नाम के अनुरूप यह मूलतः एक वन प्रदेश है। संपूर्ण भारत में वनों के अनुपात में यह प्रदेश एक अग्रणी राज्य माना जाता है तथा वन्य जीवों के संरक्षण के लिए भी यह मशहूर है। प्रचुर मात्रा में खनिज की उपलब्धता के कारण इसे भारत का 'रूर' भी कहा जाता है, जो जर्मनी में खनिज-प्रदेश के नाम से जाना जाता है।

१५ नवम्बर २००० को भारत के अट्ठाइसवें राज्य के रूप में स्थापित यह राज्य इससे पूर्व बिहार राज्य का दक्षिणी हिस्सा था। ऐतिहासिक रूप से झारखण्ड अनेक आदिवासी समुदायों का वासस्थल रहा है। आज भी यहां की करीब अट्ठाइस प्रतिशत आबादी आदिवासी है और बारह प्रतिशत लोग अनुसूचित जाति से संबंधित हैं। मुंडा, संताल, खड़िया, उरांव, असुर, बिरजिया, पहाड़िया आदि यहां के प्रमुख आदिवासी समुदाय हैं। इन्हीं आदिवासी समुदायों ने झारखण्ड के जंगलों को साफ कर खेती करने लायक जमीन बनायी और और इस इलाके को स्वयं के रहने योग्य भी बनाया। नागवंशियों, मुसलमानों, अंग्रेजों एवं अन्य बाहरी आबादी आने से पूर्व आदिवासियों की अपनी सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था थी। मुगल सल्तनत के दौरान झारखण्ड को कुकरा प्रदेश के नाम से जाना जाता था। १७६५ के बाद यह प्रदेश ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन हो गया। अंग्रेजों के अत्याचारों के विरोध में यहां अनेक विद्रोह हुए। सन् १७७२ से प्रारंभ हुआ यह विरोधों का दौर करीब सन् १९०० तक चलता रहा।

छत्तीसगढ़ के बाद देश में खनिज संपदा का प्रमुख उत्पादक झारखण्ड राज्य है। क्योंकि यहां लोहा, कोयला, तांबा, अभ्रक, बॉक्साइट, ग्रेफाइट, चूना, पत्थर, यूरेनियम आदि खनिज प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं।

झारखण्ड नक्सली-माओवादी उग्रवाद का केन्द्र भी रहा है। हजारों वर्ग किलोमीटर के दायरे में विस्तीर्ण 'नक्सलियों के लिए यहां के घने जंगल विशेष रूप से शरणस्थल बने हुए हैं। सरहुल झारखण्ड का प्रमुख त्यौहार है, जो बसंतोत्सव के रूप में मार्च-अप्रेल में मनाया जाता है।

पापों से बचाती है दया

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी

दुनिया में हिंसा चलती है तो अहिंसा भी विद्यमान है। संसार में निष्ठुरता, घृणा है तो दया का भाव भी दुनिया में देखने को मिलता है। आदमी के जीवन का एक गुण होता है--दया। जिस व्यक्ति में दया होती है, वह अनेक पापों से बच सकता है। दयावान व्यक्ति का चित्त पवित्र हो सकता है। दया के द्वारा आदमी संसार सागर को तर सकता है। आदमी में दया का विकास होना चाहिए। उसका यह लक्ष्य रहे कि उसके द्वारा किसी को दुःख न हो। हो सके तो किसी को चित्त समाधि पहुंचाने का प्रयास करना चाहिए, किन्तु किसी को दुःख पहुंचाने का प्रयास तो करना ही नहीं चाहिए।

प्राणियों को अपने समान समझना चाहिए। आदमी दूसरों से जो व्यवहार अपने लिए नहीं चाहता, उसे वैसा व्यवहार दूसरे के साथ भी नहीं करना चाहिए। दूसरों को कष्ट देना स्वयं को कष्ट देने के समान समझना चाहिए। किसी के लिए दुःखदाता नहीं बनना चाहिए। अपने कारण किसी को कष्ट हो जाए तो भीतर में कंपन होना चाहिए।

जैन सिद्धान्त में सातवेदनीय और असातवेदनीय कर्म का उल्लेख प्राप्त होता है। दया से आदमी के सातवेदनीय कर्म का बंध होता है और निर्दयता से असातवेदनीय कर्म का बंध होता है। सातवेदनीय कर्म का उदय प्राणी के लिए सुखदायक और असातवेदनीय कर्म का उदय दुःखदायक हो जाता है। जो आदमी दूसरे प्राणियों के प्रति दया का भाव रखता है, वह सुख को प्राप्त हो सकता है और जो दयाहीन व निष्ठुर होता है, वह दुःखी बन सकता है।'

पूज्यप्रवर ने झारखंड प्रवेश के संदर्भ में कहा--'आज झारखंड में आना हुआ है। एक वर्ष में दुबारा आए हैं। तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि के रूप में जाने वाले सम्मेद शिखर की ओर जा रहे हैं। झारखंड की जनता में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की चेतना परिपुष्ट हो, वह काम्य है।'

चास-बोकारो तेरापंथ महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। श्री धर्मेन्द्र जैन ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अभिव्यक्ति दी। चास-बोकारो तेरापंथ युवक परिषद ने गीत के द्वारा अपने आराध्य का अभिनंदन किया।

पूर्व सांसद व इंटक के अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर दुबे ने कहा--'आचार्यश्री के पदार्पण के अवसर पर आपका स्वागत करने के लिए मुझे कोई शब्द नहीं मिल रहा है। मैं कितना भी कहूं, कम है। मैं झारखंड की धरती पर आपका बहुत-बहुत स्वागत करता हूं। आपकी यात्रा के तीनों मिशन पूरे देश में फैलें। मेरे मन में आपके प्रति असीम श्रद्धा है। आपके आगमन से हम झारखंडवासी अत्यंत गौरवान्वित हैं। मैं आपसे यही विनती करता हूं कि आप बार-बार यहां पधारते रहें।'

निरसा के विधायक श्री अरूप चटर्जी ने कहा--'मैं मेरे क्षेत्र की संपूर्ण जनता की ओर से अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी का हार्दिक स्वागत करता हूं। आपकी पदयात्रा से हमारा क्षेत्र पवित्र बनेगा, यहां की जनता बहुत लाभान्वित होगी। इस महान पदयात्रा से झारखंड ही नहीं, पूरे देश का कल्याण होगा। हम सब पर आपका आशीर्वाद बना रहे।'

डीवीसी उच्च विद्यालय के प्रधानाध्यापक डॉ. विनय कुमार ने कहा--'विद्यालय एक विद्या मंदिर है, किन्तु आपके आगमन से आज यह एक तीर्थ बन गया है। हम लोगों का परम सौभाग्य है कि आपने हमारे झारखंड की धरती के साथ हमारे विद्यालय पर विशेष कृपा की है। हम अपने आपको बहुत सौभाग्यशाली मानते हैं कि आपके साक्षात दर्शन करने का मौका मिला है। मैंने आज आपकी जो अमृतवाणी सुनी है, उसे अपने जीवन में उतारने की भरसक कोशिश करूंगा। मैं एक बार पुनः आपका कोटि-कोटि वंदन करता हूं।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

द्वंदात्मक स्थितियों में समतालीन रहें

२५ नवम्बर। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः मैथन से रामकनाली (निरसा) की ओर प्रस्थित हुए। मैथन के अनेकानेक ग्रामीण अपने-अपने घरों के बाहर सपरिवार पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीष प्राप्त कर रहे थे। मार्गस्थ 'मोहनपन' गांव के एक असमर्थ ग्रामीण ने अपने घर से पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो पूज्यप्रवर ने अपने चरण थामकर उसे मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। मैथन प्रवास के संदर्भ में अहिंसा यात्रा की व्यवस्थाओं में सहयोग करने वाले श्री अखिलेश तिवारी ने अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठान के निकट पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। लगभग १५.५ किमी का प्रलंब विहार परिसंपन्न कर आचार्यप्रवर रामकनाली निरसा स्थित 'डोनबोस्को स्कूल' में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'आदमी के जीवन में उतार-चढ़ाव आ सकते हैं। सड़क पर भी चलते-चलते कई बार आरोह-अवरोह का अनुभव होता है। विचारों में भी कई बार आरोह-अवरोह आ जाते हैं। जीवन में कई बार विकास और खुशी के अवसर आते हैं तो कई बार ह्रास और दुःख के अवसर आते हैं। इस प्रकार जीवन में द्वंदात्मक स्थितियां आ जाती हैं। द्वंद अनेक प्रकार के हैं--

१. लाभ और अलाभ--गृहस्थ कभी बहुत अर्थार्जन कर लेता है और कभी बहुत घाटा लग जाता है। साधु को भी कभी आहार की बहुत उपलब्धि हो जाती है तो कभी अनुपलब्धता की स्थिति भी आ सकती है। क्योंकि उसे अपने लिए बना हुआ और लाया हुआ आहार ग्रहण नहीं करना होता है।

२. सुख और दुःख--कभी शरीर बिल्कुल स्वस्थ रहता है तो कभी शारीरिक वेदना उत्पन्न हो जाती है। स्वस्थता की स्थिति में आदमी को सुखी और अस्वस्थता की स्थिति में वह दुःखी बन सकता है।

३. जीवन और मरण--कभी जीवन प्राप्त होता है और कभी मृत्यु का प्रसंग भी आ जाता है। यदा-कदा परिजनों के जन्म और मृत्यु के प्रसंग भी उपस्थित हो जाते हैं।

४. निन्दा और प्रशंसा--कभी बहुत प्रशंसा तो कभी बहुत निंदा हो जाती है।

५. मान और अपमान--कभी बहुत सम्मान मिलता है तो कभी अपमान भी हो जाता है।

इन द्वंदात्मक स्थितियों को रोकना मुश्किल अथवा असंभव हो सकता है, किन्तु आदमी को इन स्थितियों में समत्व रखने का प्रयास करना चाहिए। भौतिक अनुकूलता में ज्यादा खुशी और भौतिक प्रतिकूलता में ज्यादा दुःखी नहीं बनना चाहिए। जो आदमी भौतिक अनुकूलता में ज्यादा खुशी मनाता है, उसे भौतिक प्रतिकूलता में ज्यादा दुःखी बनना पड़ सकता है।

समता को धर्म बताया गया है। आदमी को जीवन में अच्छा पुरुषार्थ करना चाहिए, फिर अनुकूलता या प्रतिकूलता जो भी आए, उसमें संतुलित रहने का प्रयास करना चाहिए। समता प्रसन्नता और शांति देने वाला तत्त्व है।

विद्यालय के चेयरमेन श्री रवीन्द्रसिंह सैनी ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए कहा--'हमारा अत्यंत सौभाग्य है कि इस धरती पर गुरुजी ने कृपा कर अपने चरण रखे हैं। यह इस धरती और इस स्कूल का अहोभाग्य है, जो ऐसे महासंत गुरुजी यहां विराजमान हैं और अपनी सत्संगत से हम सबको लाभान्वित किया। आपकी इस मेहरबानी के लिए मैं आपका आभारी हूं।'

शुभ रहें प्रवृत्ति के तीनों साधन

२६ नवम्बर। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः रामकनाली (निरसा) से बागसुमा की ओर प्रस्थान किया। मार्गस्थ बरकाबाद, अम्बोना मोड़ और देवलीबाजार के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए तो आचार्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीष प्रदान की। लगभग ११.५ किमी का विहार संपन्न कर आचार्यप्रवर बागसुमा में पधारे। राजकीय मध्य विद्यालय में परम पूज्य आचार्यप्रवर का आज का प्रवास हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन में आत्मा का परम महत्त्वपूर्ण स्थान है। सिद्धांत है कि शरीर के भीतर चेतना है। वह है तभी प्रवृत्ति का सारा क्रम चल रहा है। आत्मा के योग से होने वाली प्रवृत्ति के तीन साधन हैं--शरीर, वाणी और मन। शरीर, वाणी और मन की प्रवृत्ति योग कहलाती है। आदमी को शरीर, वाणी और मन पर अनुशासन करना चाहिए। शरीर से गलत कार्य न हो, वाणी से गलत भाषा का प्रयोग न हो तथा मन से गलत स्मृति, चिन्तन और कल्पना न हो। इतना हो जाता है तो आदमी का यह जीवन भी प्रशस्त हो सकता है और आगे भी सद्गति मिलने की संभावना बन जाती है।

स्थूल शरीर हमें दिखाई देता है। उसके साथ सूक्ष्म और सूक्ष्मतर शरीर भी होते हैं। कार्मण शरीर सूक्ष्मतर शरीर होता है। मोह कर्म प्राणी के शरीर, वाणी और मन की प्रवृत्ति को खराब बना देता है। मोह कर्म अप्रभावी हो जाए तो शरीर, वाणी और मन के प्रवृत्ति प्रशस्त हो जाती है।

आदमी के मन में मलिन विचार नहीं आने चाहिए। मन को शुभ रखने का प्रयास करना चाहिए। वाणी से अशुभ शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। झूठ, कटु और मर्मभेदी भाषा से बचना चाहिए। वाणी से पवित्र मंत्र आदि का पाठ करना चाहिए। आदमी को जबान पर लगाम रखना चाहिए। बोलने से पहले ध्यान देना चाहिए कि जो बात बोल रहा हूं वह यथार्थ, हितकर, आवश्यक और मधुर है या नहीं? शरीर की प्रवृत्तियां भी अच्छी रहनी चाहिए। शरीर से किसी प्राणी को दुःख देने का प्रयास नहीं करना चाहिए। उससे आध्यात्मिक परोपकार करना चाहिए। छोटे-छोटे प्राणियों के प्रति करुणा, दया, अहिंसा की भावना रखनी चाहिए। इस प्रकार प्रवृत्ति के तीनों साधन अशुभ न बनें, शुभ रहें, यह काम्य है।'

आज गिरडीह में प्रवास करने वाले तीन श्रद्धालु परिवारों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। गिरडीह झारखंड का एक जिला है। सम्मेद शिखर इसी जिले में स्थित हैं। अपने आराध्य के अपने क्षेत्र में पदार्पण के संदर्भ में वे हर्षविभोर बने हुए थे। गिरडीह प्रवासी दुधोड़िया, सुराणा और बैद जाति के इन तीनों परिवारों ने आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के उपरान्त करीब ११.११ बजे से पूज्यप्रवर के मुखारविन्द से सम्यक्त्व दीक्षा स्वीकार की। आचार्यप्रवर ने उन्हें निकट उपासना का अवसर भी प्रदान किया। इतनी निकटता से पूज्यप्रवर के सेवा का अवसर प्राप्त करना संभवतः उनके जीवन का प्रथम अवसर था।

जीवन के तीनों यामों में रहे सदाचार

२७ नवम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः बागसुमा से कल्याणपुर के लिए प्रस्थान किया। मार्गवर्ती गोविन्दपुर, रतनपुर, पाकिरडीह और बरवाअड्डा के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। मार्गस्थ मधुवन होटल से संबंधित भिवानी के अग्रवाल परिवार ने होटल के निकट पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। होटल के ऑनर श्री शंभुनाथ अग्रवाल बोले--'गुरुजी! प्रतिदिन टेलिविजन पर हम आपके प्रवचन सुनते हैं। आज आपके साक्षात् दर्शन कर हम

धन्य हो गए। इस अवसर पर सरदारशहर का अग्रवाल परिवार और झूंझनू का एक अन्य परिवार भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुआ।

लगभग १६.० किमी का विहार परिसंपन्न कर पूज्यप्रवर कल्याणपुर में स्थित राजकीय मध्य विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री कन्हैयालाल झा आदि विद्यार्थियों ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'शास्त्र में तीन याम बताए गए हैं--प्रथम, मध्यम और पश्चिम। आठ वर्ष से तीस वर्ष तक की अवस्था प्रथम याम है। तीस वर्ष के बाद से साठ वर्ष तक की अवस्था मध्यम याम और उससे आगे की अवस्था पश्चिम याम है। मनुष्य तीनों अवस्थाओं में समान नहीं रहता। उसे यह ध्यान देना चाहिए कि जीवन के तीनों याम अच्छे ढंग से बीतें। प्रथम याम में ज्ञानार्जन का प्रयत्न विशेष रूप से करना चाहिए। ज्ञानाभ्यास पूरा होने के बाद आदमी कार्य क्षेत्र में उतरता है। पारिवारिक संभाल और व्यापार आदि करना मध्यम अवस्था में विशेष रूप से होता है। पश्चिम याम में तो निवृत्ति का समय आ जाता है।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की दृष्टि से जीवन के प्रथम याम में आदमी को सप्ताह में कम से कम एक (यथासंभव शनिवार को सायं सात बजे से आठ बजे के बीच) सामायिक कर लेनी चाहिए। तीस वर्ष की अवस्था के बाद हो सके तो प्रतिदिन एक सामायिक का प्रयत्न करना चाहिए। साठ वर्ष की अवस्था के बाद तो यथासंभव प्रतिदिन दो सामायिक का प्रयास करना चाहिए।

इसके साथ जीवन के तीनों यामों में सदाचार रहना चाहिए। चाहे बचपन है, चाहे जवानी है, चाहे बुढ़ापा, सदाचार तो हर अवस्था में रहना चाहिए। सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति सदाचार से जुड़े हुए तत्त्व हैं। आदमी को सबके प्रति सद्भावना रखनी चाहिए, व्यर्थ वैर-विरोध, मारकाट, दंगा-फसाद, हिंसा से बचने का प्रयास करना चाहिए। जो भी कार्य करे, उसमें नैतिकता रखने का प्रयास करना चाहिए। शराब, सिगरेट, बीड़ी, गुटखा आदि नशीले पदार्थों के सेवन से बचना चाहिए।

यह मानव जीवन बीत रहा है। आदमी को जीवन में अच्छा और पवित्र सेवा कार्य करने का प्रयत्न करना चाहिए। निरुद्देश्य जीवन व्यतीत होना सामान्य बात है। आदमी को कुछ विशेष करने का लक्ष्य रखना चाहिए। उसे यह ध्यान देना चाहिए कि उसका जीवन कैसे बीत रहा है। मानव जीवन बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसे अति भोगों, प्रमाद आदि में व्यर्थ गंवा देना तो मूर्खता की बात होती है। ऐसे प्राणी भी संसार में हैं, जिन्हें आज तक मनुष्य जन्म मिला ही नहीं। ऐसी स्थिति में आदमी को यह दुर्लभ मानव जीवन प्राप्त है। उसे इसका सम्यक् लाभ उठाना चाहिए। हिंसा, झूठ, चोरी आदि से बचते हुए अध्यात्म की साधना में समय लगाना चाहिए। ऐसा होता है तो यह मानव जीवन सुफल और सार्थक हो सकता है।

मानव जीवन को यदि पापों में गंवा दिया तो मानना चाहिए संसार की योनियों में पुनः भ्रमण करना होगा। त्यागी साधु मानों मानव जीवन का अच्छा लाभ उठाने वाले होते हैं। त्याग-संयम के पथ पर चलने वाले साधुओं की संगत का अवसर मिलना भी अपने आप में अच्छी बात होती है। इसलिए जब भी ऐसा सुअवसर मिले, उसका अच्छा लाभ उठाना चाहिए।'

समुपस्थित कल्याणपुरवासियों ने पूज्यप्रवर से अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति प्राप्त कर प्रतिज्ञात्रयी स्वीकार की।

राजकीय मध्य विद्यालय के सहायक शिक्षक श्री अनिल पाण्डेय ने कहा--'कल्याणपुर की धरती और

इस विद्यालय में परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण का बहुत-बहुत स्वागत और अभिनंदन करता हूं। ऐसे महापुरुष का पदार्पण हमारे लिए अत्यन्त सौभाग्य की बात है। हम आपका स्वागत कर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव कर रहे हैं।'

उदयपुर पंचायत की मुखिया श्रीमती निर्मला देवी ने कहा--'हमारे पंचायत की धरती पर पधारकर अहिंसा यात्रा प्रणेता शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी ने हमें धन्य कर दिया। मैं अपनी ओर से तथा मेरे संपूर्ण क्षेत्र की जनता की ओर से गुरुजी का सादर स्वागत करते हुए उनसे आशीर्वाद चाहती हूं कि मेरे क्षेत्र में शांति और सुख व्याप्त रहे।'

आज सायंकाल सिन्धरी के विधायक श्री फूलचंद मंडल ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया। आज दिन-रात में अनेकानेक ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और यथावसर पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। साधु-संन्यासियों के प्रति उनका सहज भक्तिभाव उन्हें आचार्यप्रवर के प्रति अनायास और ज्यादा आकृष्ट कर रहा था। रात्रिकालीन कार्यक्रम में भी ग्रामीणों की अच्छी उपस्थिति रही। पूज्यप्रवर ने कार्यक्रम में पधारकर समुपस्थित ग्राम्यजनों को पावन संबोध प्रदान किया।

ज्ञान, दर्शन और चारित्र रूपी बोधि प्राप्त करें

२८ नवम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः कल्याणपुर से काण्डेडीह की ओर प्रस्थान किया। क्रमशः प्रवर्धमान होती ठंड से बचाव के लिए लोग अलाव जलाकर आतप प्राप्त करने का प्रयास कर रहे थे। सर्द हवा के बीच अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यप्रवर अपने कारवां का कुशल नेतृत्व करते हुए अपने गंतव्य की ओर निरंतर गतिमान थे। मार्गस्थ बरवारी के लोगों और विद्यार्थियों ने आचार्यप्रवर के दर्शन किए तो पूज्यप्रवर ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। रामगंज के ग्रामीणों ने समूह रूप में आचार्यप्रवर का स्वागत किया। उस समूह में धावचीता मध्य विद्यालय के शिक्षक पूज्यप्रवर को उपहृत करने के लिए फूलों का गुलदस्ता भी लाए थे। उन्हें साधुचर्या की जानकारी दी गई। पूज्यप्रवर ने ग्रामीणों को पावन प्रेरणा और आशीष प्रदान की। बोरबंध के ग्रामीण भी पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। लगभग १५.५ किमी का विहार परिसम्पन्न कर पूज्यप्रवर काण्डेडीह स्थित राजकीय उत्क्रमित मध्य विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारे जीवन में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। ज्ञान से प्रकाश मिलता है और ज्ञान से चेतना की निर्मलता भी बढ़ती है। दर्शन अर्थात् श्रद्धा का भी बड़ा महत्त्व है और आचरण अर्थात् चारित्र भी बहुत महत्त्वपूर्ण है। ज्ञान से जानकारी बढ़ती है। सम्यक् ज्ञान भी एक प्रकार की बोधि है। दर्शन के अंतर्गत यथार्थ के प्रति श्रद्धा होती है, वह भी बोधि है और संयम-अहिंसापूर्ण आचरण भी बोधि होती है। इस प्रकार बोधि तीन प्रकार की हो जाती है--ज्ञान, दर्शन और चारित्र।

विद्यार्थी विद्यालय, महाविद्यालय में ज्ञानार्जन के लिए जाते हैं। आज विद्या प्राप्ति के कितने साधन उपलब्ध हैं। विद्यार्थियों को भूगोल, खगोल, विज्ञान आदि विषयों और विभिन्न भाषाओं का ज्ञान दिया जाता है। उसका भी महत्त्व है। उसके साथ विद्यार्थियों को अध्यात्म विद्या का भी बोध दिया जाए तो लौकिक विद्या और लोकोत्तर विद्या (अध्यात्म विद्या) का सुन्दर योग हो सकता है। गृहस्थ के लिए लौकिक विद्या का ज्ञान भी अपेक्षित है, उसके साथ लोकोत्तर विद्या का ज्ञान भी आवश्यक होता है। अध्यात्म विद्या को प्राप्त कर आदमी ऐसे कार्यों से बच सकता है, जो त्याज्य हैं, दंडनीय हैं, निन्दनीय हैं, गर्हणीय हैं। इसलिए विद्यार्थियों

को अध्यात्म विद्या को प्राप्त करने का प्रयत्न करना चाहिए।

विद्यार्थियों में ज्ञानवृद्धि के साथ ऐसा दर्शन (आस्था) विकसित हो कि वे जिन्दगी में अच्छे कार्य करें, गलत कार्य न करें। ज्ञान और दर्शन के साथ विद्यार्थियों का चरित्र भी उन्नत होना चाहिए। वे ईमानदारी, सद्भावना, अहिंसा को आचरणगत बनाएं और उनका व्यवहार विनयपूर्ण हो तो विद्यार्थियों का जीवन अच्छा बन सकता है। शिक्षक भी विद्यार्थियों में अध्यात्म विद्या के विकास का प्रयत्न करते रहें तो आज के विद्यार्थी कल के महापुरुष भी बन सकते हैं। भारत में कितने-कितने महापुरुष हुए हैं, वे भी कभी तो बच्चे ही थे। इसलिए बच्चे अच्छे होंगे, ज्ञानवान और सच्चरित्रवान होंगे तो उनकी चेतना अच्छी हो सकेगी और राष्ट्र का भविष्य भी अच्छा हो सकेगा।

विद्यार्थियों में ज्ञान प्राप्ति की ललक होनी चाहिए। आदमी परिश्रम, अभ्यास से सिद्धि को प्राप्त कर सकता है। आलस्य को मनुष्यों का महान शत्रु और श्रम को बन्धु कहा गया है। अच्छा परिश्रम करने वाला विद्यार्थी विकास कर सकता है।'

पूज्यप्रवर ने समुपस्थित ग्रामीणों और विद्यार्थियों को अहिंसा यात्रा की अवगति प्रदान कर संकल्पत्रयी भी स्वीकार करवाई।

राजकीयकृत मध्य विद्यालय, काण्डेडीह के प्रधानध्यापक श्री मिहिरचन्द्र मंडल ने आचार्यप्रवर का स्वागत करते हुए कहा--'जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी की पावन चरणधूलि से हमारा यह विद्यालय धन्य हुआ, यह हमारे लिए अत्यंत सौभाग्य की बात है। आचार्यश्री तीन देशों और भारत के १६ राज्यों की पैदल अहिंसा यात्रा करते हुए आज हमारे यहां पधारे हैं। मैं संपूर्ण विद्यालय परिवार की ओर से आपका स्वागत और अभिनन्दन करता हूं। ऐसे महापुरुष का सान्निध्य और प्रेरणा प्राप्त कर हम धन्य हैं। मेरा यह विश्वास है कि आपके उपदेशों से हमारे विद्यार्थियों का जीवन संवर जाएगा।'

उत्क्रमित उच्च विद्यालय, काण्डेडीह की ओर से श्री अरुण कुमार ने कहा--'हमारे लिए यह गौरव की बात है कि हमें इस महान पदयात्रा में संभागी बनने का मौका मिला। आचार्यश्री के स्वागत का सुअवसर प्राप्त कर हम स्वयं को सौभाग्यशाली मान रहे हैं। हमारे जीवन के ये पल बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं कि हमें ऐसे महान गुरुजी का सान्निध्य प्राप्त हुआ है और आपकी वाणी को सुनने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ है।'

आज दिन-रात्रि में स्थानीय लोग बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर के दर्शन और यथावसर पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए।

भयावह, दुर्गम और बीहड़ वन में बेखौफ बढ़े अहिंसा यात्रा के महानायक

२६ नवम्बर। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः काण्डेडीह से अम्बाडीह के लिए प्रस्थान किया। इससे पूर्व सूर्योदय के आसपास लाडनूं की ओर गति कर रहे मुनि जयकुमारजी आदि संतों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। उन्होंने गत ५ नवम्बर को पूज्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण कर बहिर्विहार में विहरण प्रारम्भ किया था, आज अपने गंतव्य की ओर आगे बढ़ते हुए उन्होंने पूज्यप्रवर के दर्शन कर लिए। 'मानतान तोपचांची' गांव तक वे पूज्यप्रवर के साथ रहे। पूज्यप्रवर राष्ट्रीय राजमार्ग छोड़कर भीतरी मार्ग पर पधारे तो उन्होंने पूज्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण कर पुनः गुरुकुलवास से विदा ली। पूज्यप्रवर उन्हें पहुंचाने कुछ कदम पधारे। अपने गुरु के इस अनुग्रह में अभिस्नात मुनिवृंद भावविभोर बने हुए थे।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों का गत रात्रि का प्रवास पूज्यप्रवर के प्रवास क्षेत्र काण्डेडीह से करीब पांच किमी दूर था। पूज्यप्रवर के आज के प्रवास स्थल में स्थान की अल्पता के तथा मार्ग की विषमता देखते हुए सभी साध्वियों का आज दिन का प्रवास पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल से करीब दस किमी दूर पाण्डेडीह में रखा गया था। काफी साध्वियां पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व ही 'मानतान तोपचांची' गांव से अपने गंतव्य की ओर बढ़ गईं। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि कुछ साध्वियां पूज्यप्रवर के दर्शन करने के लिए वहां रुकी हुई थीं। पूज्यप्रवर ने 'मानतान तोपचांची' गांव में श्री दयानंद महतो परिवार के मकान के बरामदे में आसीन हुए। साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। तदुपरान्त साध्वियां अपने गंतव्य की ओर बढ़ गईं और पूज्यप्रवर उसी मार्ग से अपने गंतव्य की ओर प्रस्थित हो गए। 'मानतान तोपचांची' गांव में ग्रामीणों के समूह ने पूज्यप्रवर का स्वागत किया। पूज्यप्रवर ने उन्हें पावन प्रेरणा प्रदान की।

राष्ट्रीय राजमार्ग के बाद का आज का विहार पथ बीहड़ था। इस घुमावदार, उबड़-खाबड़, दुर्गम और संकरे पथ के आसपास आबादी कम है। जहां-जहां भी आबादी है, वहां पूरी तरह ग्रामीण परिदृश्य दृष्टिगोचर हो रहा था। इस मार्ग पर पक्के मकान कम ही हैं। गोबर से लिपी हुई ईंट या घासफूस की दीवारों और कोल्हू की छतों से युक्त मकानों में रहने वाले ग्रामीण आज अहिंसा यात्रा और उसके महानायक को साश्चर्य निहार रहे थे तथा पूज्यप्रवर के विषय में अवगति प्राप्त कर पूज्यचरणों में अपनी प्रणति भी अर्पित कर रहे थे। घरों के आसपास बंधे हुए गाय आदि जानवरों के कारण मार्ग और अधिक संकरा बना हुआ था।

इस पथ में जहां-जहां आबादी नहीं है, वह पूरा क्षेत्र वन के रूप में स्थापित है। हजारों-हजारों सघन वृक्षों से परिपूर्ण यह वन नक्सली गतिविधियों का भी प्रमुख केन्द्र है। आधुनिक हथियारों से लैस नक्सली यहां बहुधा घनी झाड़ियों के पीछे घात लगाए बैठे रहते हैं। प्रशासनिक अधिकारी, पुलिस आदि मुख्य रूप से उनका निशाना होते हैं। पूज्यप्रवर इस भयावह पथ पर बेखौफ अपनी धवल सेना का नेतृत्व करते हुए गतिमान थे। स्थानीय प्रशासन अपने राजकीय अतिथि की सुरक्षा में कोई कोताही नहीं बरतना चाहता था, इसलिए शताधिक पुलिसकर्मी पूज्यप्रवर और उनकी धवल सेना की सुरक्षा में तैनात थे। इन सशस्त्र पुलिसकर्मियों को देखकर अनायास अंदाजा लगाया जा सकता था कि यह पथ कितना खतरनाक है।

राजपथ छूटने के साथ ही सम्मेद शिखर के पहाड़ों का नैकट्य बढ़ता जा रहा है। घुमावदार पथ में यदा-कदा सम्मेद शिखर के पर्वत और तीर्थंकरों की निर्वाण स्थली कहलाने वाली 'टोंक' धुंधले रूप में दृष्टिगोचर हो रही थीं। पूर्व में वहां जा चुके लोग चारित्रात्माओं और अन्य लोगों को उस दिशा में संकेत कर उनके विषय में अवगति दे रहे थे।

सूर्य और उसका आतप सघन वन में विहरण कर रहे अहिंसा यात्रा के संभागियों को कम ही छू पा रहा था। छायादार पथ, पक्षियों का मधुर कलरव और झींगुरों की तीक्ष्ण आवाज प्रकृतिप्रिय शांतिप्रिय मनुष्यों को आकृष्ट करती हुई सी प्रतीत हुई। मार्गवर्ती धाजाटांड और मंझिलाडीह के ग्रामीण भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। इस वन प्रदेश और बीहड़ पथ पर भी सरकार की ओर से बिजली की व्यवस्था है, किन्तु अवैध तरीके से बिजली प्राप्ति के लिए यत्र-तत्र जोड़े गए अव्यवस्थित तार खतरे का संकेत लिए हुए थे।

पूज्यप्रवर १०.५ किमी का विहार कर अम्बाडीह में स्थित उत्क्रमित मध्य विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। पूज्यप्रवर के प्रातराश तक साध्वीवर्याजी आदि कुछ साध्वियां और समणियां अम्बाडीह

में ही रुकी रहीं। उसके कुछ देर बाद वे भी साध्वियों के प्रवास स्थल की ओर प्रस्थित हो गईं।

पूज्यप्रवर मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में प्रवचन कर रहे थे, तब सूचना प्राप्त हुई कि महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी का साधन खराब हो गया है, इसलिए वे आगे बढ़ने की अपेक्षा लौट रही हैं। पूज्यप्रवर ने व्यवस्था पर ध्यान देने का निर्देश दिया और तदनुसार सारी व्यवस्था भी की गई। साध्वीप्रमुखाजी पूज्यप्रवर की सन्निधि में पधारीं तो पूज्यप्रवर ने उनसे पूछा कि मार्ग में क्या हुआ? उन्होंने पूज्यप्रवर से निवेदन किया--'पूज्यप्रवर ने मुझे फरमाया था कि यहां प्रातराश करके जाना मैं यहां प्रातराश करके नहीं गई, इस कारण मुझे लौटना पड़ा। मैंने अभी तक भी प्रातराश नहीं किया। हुआ यों कि मार्ग अत्यधिक दुर्गम होने के कारण मैं पैदल ही चल रही थी। उबड़-खाबड़ मार्ग पर चलते साधन भी टूट गया। आगे जाना संभव नहीं लगा तो हम लोग पुनः आपश्री की सन्निधि में ही लौट आए।'

साध्वीवर्याजी भी साध्वीप्रमुखाजी के साथ लौट गईं, किन्तु मुख्यनियोजिकाजी आदि करीब ४५ साध्वियां पाण्डेडीह पहुंच गई। साध्वीप्रमुखाजी सहित मात्र नौ साध्वियां पूज्य सन्निधि में उपस्थित थीं। आचार्यप्रवर ने उन्हें आज का प्रवास अम्बाडीह में ही करने का निर्देश दिया। तदनुसार महाश्रमणीजी का प्रवास भी इसी विद्यालय परिसर में हुआ।

न डरो, न डराओ

आज के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी को हिंसा के मार्ग से दूर रहना चाहिए। जितना संभव हो सके, अहिंसा के मार्ग पर चलना चाहिए। जीवन में अभय का बड़ा महत्त्व है। जो आदमी दूसरों को भयभीत करता है, उसे स्वयं को भयभीत होना पड़ सकता है। आदमी को स्वयं निर्भीक रहना चाहिए और दूसरों को डराने से बचना चाहिए। जो आदमी न स्वयं डरता है और न दूसरों को डराता है, वह पूर्णतया अभय बन सकता है। भय अपने आप में कमजोरी है। आदमी भय के कारण प्रणातिपात और मृषावाद-इन दो पापों में प्रवृत्त हो सकता है। क्षीण मोह वीतराग पुरुष पूर्णतया अभय होते हैं। जो आदमी पूर्णरूपेण अभय होता है, वह दुनिया का परम सुखी व्यक्ति होता है।

अभय को विकसित करने का उपाय है--सभी प्राणियों के प्रति मैत्रीभाव का विकास। ज्यों-ज्यों मैत्री का भाव विकसित होता है, त्यों-त्यों अभय का भाव भी पुष्ट होता है। इस प्रकार अभय और मैत्री का परस्पर संबंध है। अपना बुरा करने वाले के प्रति भी व्यक्ति को मंगल मैत्री का भाव रखना चाहिए। आदमी को भय के भाव को दुर्बल बनाने का प्रयास करना चाहिए। प्रेक्षाध्यान के अंतर्गत अनुप्रेक्षा का क्रम चलता है। अनुप्रेक्षाओं में एक है--अभय की अनुप्रेक्षा। अभय की अनुप्रेक्षा के द्वारा भी भय को कमजोर करने का प्रयत्न किया जा सकता है। भय की स्थिति सामने आ जाए तो उस समय भयभीत होने की अपेक्षा समुचित प्रतिकार करने का प्रयास करना चाहिए।

संत की वाणी का कई बार बड़ा असर हो सकता है। सामान्य आदमी की बात का प्रभाव न भी हो, किन्तु संतों की साधनासिक्त वाणी का प्रभाव जनता पर हो सकता है। उसे सुनकर आदमी गलत कार्यों को छोड़ समता और सद्गुणों को ग्रहण कर सकता है। प्रमादी, गलत कार्य करने वाला व्यक्ति, भयभीत हो सकता है। अप्रमादी या गलत न करने वाला भयभीत क्यों होगा? झूठ बोलने वाले को डरकर रहना पड़ सकता है। जो सत्यवादी है, उसे उस बात को लेकर भय क्यों होगा? झूठ तनाव और भय का मार्ग है। एक झूठ को छिपाने के लिए कई झूठ बोलने पड़ सकते हैं। आदमी सबके प्रति मंगल मैत्री भाव रखते

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/15-17 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2015-2017
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

हुए प्रमाद और गलत कार्यों से बचे तथा अभय की अनुप्रेक्षा का प्रयोग हो तो अभय का भाव परिपुष्ट हो सकता है।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'भिक्षु स्वामी का स्मरण किया जाता है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ शासन में तो भिक्षु स्वामी का नाम--'ऊँ भिक्षु, जय भिक्षु' मानों मंत्र के रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त है। स्वामीजी का नाम मंत्राक्षर के रूप में माना गया है। कितने-कितने लोग प्रतिदिन भिक्षु स्वामी को याद करते होंगे। ऐसा कोई मंत्र आलंबन के रूप में हो जाए तो भय की स्थिति में कुछ आलंबन मिल सकता है और कुछ पौरुष भी जाग सकता है।

कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षकों को परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति देते हुए संकल्पत्रयी स्वीकार करने की प्रेरणा दी तो वे आचार्यप्रवर से कृत संकल्प बने।

जंगल में निर्मित इस विद्यालय में आचार्यप्रवर की सुरक्षा हेतु झारखण्ड प्रशासन पूरी तरह सतर्क दिखाई दिया। वायरलेस सिस्टम से जुड़े हुए सशस्त्र पुलिस और सीआरपीएफ के करीब सौ जवान दिन-रात में पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल के आसपास तैनात रहे। इसके साथ सीआरपीएफ के शताधिक सशस्त्र जवान पूरी रात विद्यालय के आसपास की झाड़ियों में ही रहे। इस भयानक जंगल में, जहां लोग दिन में भी जाने से कतराते हैं, पूज्यप्रवर की मंगलमयी सन्निधि में सभी निश्चिन्तता का अनुभव कर रहे थे। पूज्यप्रवर के सम्मेद शिखर के त्रिदिवसीय प्रवास के संदर्भ में देश-विदेश से श्रद्धालु भी बड़ी संख्या में पहुंच रहे थे। मार्ग की भयावहता, दुर्गमता और विषमता को देखकर अनायास उनके मुंह से यही स्वर प्रस्फुटित हो रहा था 'आचार्यश्री इस मार्ग से कैसे पधारे होंगे, और कल कैसे पधारेंगे?'

संबोधन अलंकरण समारोह : एक सूचना

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के मुखारविन्द से सन् २०१७ में संबोधन प्राप्त श्रावक-श्राविकाओं का सम्मान समारोह जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा परम पूज्य आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में कटक में १५४वें मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम में अर्थात् २३ जनवरी २०१८ समायोज्य है। २२ जनवरी २०१८ को संबोधन प्राप्तकर्ताओं के सम्मान में मिलन गोष्ठी भी रखी गई है। महासभा द्वारा संबोधन प्राप्तकर्ताओं एवं उनके परिजनों से अनुरोध किया गया है कि संबोधन प्राप्तकर्ताओं के परिचय के साथ सम्मान प्राप्त करने वाले व्यक्ति का नाम (यथाव्यवस्था) यथाशीघ्र तेरापंथी महासभा कोलकाता स्थित मुख्य कार्यालय में प्रेषित करें। अधिक जानकारी हेतु मो. नं. ७०४४४४७७७७ पर संपर्क किया जा सकता है। कटक में आवास व्यवस्था हेतु मो. नं. ८३३६०००० ६६, ८३३६०००० ८८, ८३३६०००० ७७ और ८३३६०००० ६६ पर संपर्क किया जा सकता है।

पत्र व्यवहार की दृष्टि से हमारा पता है--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-११०००२ फोन नं-०७३८४४३६५७२, ०६७८४४०७४६१
दिल्ली कार्यालय का नं.-२३२३४६४१, ६३१०२३४६४१

●

स्वामी आदर्श साहित्य संघ के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हेमराज बैद के द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-६, नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२ से मुद्रित एवं आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२ में प्रकाशित। सम्पादकः केशवप्रसाद चतुर्वेदी